Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:4.081
Volume-12, Issue-4, March-2019 www.researchguru.net

विष्णु प्रभाकर की चयनित कहानियों में युग चेतना

फुलवंतीबहन मंगाभाई वसावा
एम.फिल., शोधार्थी, गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद - 380014,ई-मेल :
fulvantimvasava@gmail.com
मोबाईल नं 9727674272

सारांश -

वर्तमान युग आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृति विटंबणाओं से जूझता युग हैं। समाज में अनेक अथ्याचार एवं अनेक मनमुटाव हो रहें है। इसी लिए मैंने अपने इस शोध लेख में समाज संस्कृति धर्म, दर्शन, आध्यात्मिक नैतिकता तथा विज्ञान आदि का स्वरूप के माध्यम से समाज को सही रस्ते पर आने और उसे ठीक उसी रूप में ग्रहण कर अभिव्यक्त करना कवि कथाकार एवं नाटककार के साहित्य के माध्यम से समाज को एक सीख देने का प्रयास किया है। तत्कालीन युग की विचारधाराएँ जो युगीन जीवन में चेतना का संचार करती है, साहित्य में युग-चेतना के नाम से जानी जाती है। प्रत्येक रचनाकार की रचना का मूलाधार युगीन जीवन और उससे संबंधित घटनाएँ रहती है। इसलिए साहित्य के माध्यम से युग-चेतना की अभिव्यक्ति होना सहज बात है। युग-चेतना से पृथक रहकर साहित्यकार अपनी रचना में तत्कालीन समय उपस्थित नहीं कर सकता पर इनके तहत समाज और एक सुजाव अवश्य प्राप्त कर सकता है। युग का प्रभाव पूरे समाज पर देखा जा सकता है। नयी मान्ताएँ युग को निरंतर प्रभावित करती है। जिसके परिणाम स्वरूप पुरानी और तत्कालीन चेतना मान्यता और आस्था धीरे-धीरे परिवर्तित होती है और नयी मान्यताएँ चेतना और आस्था सुद्रढ बनती रहती हैं। अत: मैंने अपने शोध के माध्यम से समाज के वर्तमान युग की और ध्यानाकर्षित करने का प्रायास किया है।

शब्द कूंची - साहित्यकार विष्णु प्रभाकर का विचार, युग शब्द का कोशगत अर्थ है, युग शब्द की
चेतना, मनोविज्ञानिक परिवेश, विष्णु प्रभाकर के कथा साहित्य में युग विचार आदि।

प्रस्तावना -

किसी भी साहित्यकार का व्यक्तित्व उनकी रचनाओं में प्रतिबिबिंत होता है। व्यक्तित्व मनुष्य के लिए व्यक्ति के जीवन के संघर्ष, उतार-चढ़ाव, रुचियाँ, परिवेश और परिस्थितियाँ आदि की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है। जिनसे व्यक्ति निर्मित होता है। प्रत्येक साहित्यकार जीवन के प्रत्येक क्षण को जीता है और उसे कला के आवरण में ढालकर व्यक्त करता है। इसलिए साहित्यकार के कृतित्व का आकलन करने से पूर्व उसके व्यक्तित्व के विविध पक्षों को सूक्ष्मता से देखना आवश्यक हो जाता है। विष्णु प्रभाकर आधुनिक हिंदी साहित्यकारों में एक ऐसा यशस्वी नाम है, जो आधी शताब्दी से भी अधिक साहित्य साधना में निष्ठापूर्वक रत है। विष्णु प्रभाकर गांधीवादी थे। उनकी वेशभूषा अत्यंत सादी थी। वे खादी का पायजामा, कृर्ता, जाकट और खादी की टोपी पहनतें थे। विष्णु प्रभाकर के साहित्य में प्रभाकर जी के बारें में बताया है कि “देश भक्ति, त्याग, समर्पण की भावना, अन्याय के

प्रति-विद्रोह, शोषित-पीड़ित मानव के प्रति सहानुभूति, नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था आदि गुणों से उनका व्यक्तित्व ओतप्रोत है।

युग शब्द का कोशगत अर्थ है - "समय, काल, बोध, प्रतीति, जानकारी अथवा किसी के अस्तित्व प्रकार स्वरूप आदि का परिज्ञान।" युग शब्द के कालखंड विशेष का बोध होता है। अत: हम युग को कालवाची इकाई हम युग को कालवाची इकाई भी कह सकते हैं। युग शब्द का अर्थ समय या काल से लगाया जाता है। युग से तात्पर्य पुराण मत से काल का सुदीर्घ परिणाम सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग से भी होता है। सामान्यत: किसी एक काल विशेष में तत्कालीन समाज की सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं धार्मिक घटनाओं और वैचारिक धाराओं का प्रवाह युग नाम से जाना जाता है। आचार्यों ने युग शब्द से तात्पर्य एक समय विशेष से माना है। युग शब्द अपनी व्याप्त में संपूर्ण मानव संस्कृति का काल सापेक्ष अर्थ देता है। इसलिए जब हम हिंदी साहित्य के इतिहास के संदर्भ में किसी विशिष्ट युग की चर्चा करते हैं तो उससे उस युग की सामान्य प्रवृतियों, परिस्थियों एवं उपलब्धियों का अर्थ बोध होता है। अंग्रेजी में युग को AGE कहते हैं। AGE का अर्थ LIFE TIME या THE TIME TURING WHICH A PERSONAL OR THING HAS LIVE है। AGE से तात्पर्य 'A PERIOD OF TIME से भी है। जिसका हिंदी अर्थ युग काल या समय है। इस प्रकार युग शब्द से एक समय विशेष का अर्थ प्रकट होता है।" सरल अर्थ में युग कालखंड या काल इकाई है जिस काल इकाई की विशेषता रहती है और इस समय जिस प्रकार की रचनाएँ होती है उसी के आधार पर उस समय विशेष या युग का नामकरण किया जाता है। इस प्रकार युग की अपनी प्रवृत्ति और विशेषताएँ होती है। जिनके आधार पर इस का अर्थ एवं क्षेत्र व्यापक धरातल पर आधारित होता है।

युग शब्द की तरह चेतना शब्द भी व्यापक सदर्भ में प्रयुक्त हो रहा है। चेतना शब्द चेतना या सूक्ष्म दृष्टि से देखे तो चेत शब्द से बना है। जिस प्रकार धर्म, श्रद्धा, आध्यात्मिकता, ईश्वर, जीव, जगत् जैसे अनेक शब्दों की परिभाषा करना मुश्किल है उसी प्रकार चेतना शब्द की परिभाषा नहीं दी जा सकती। हम केवल उसका अनुभव कर सकते है। फिर भी कुछ विद्वानों ने चेतना की परिभाषा देने का प्रयास किया है। इनमें से कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार है - रविन्द्र जैन के अनुसार "चेतना एक प्रवाह प्रक्रिया है, जो प्रवाह में परिवर्तन और गति की अनिवार्यता होती है।" चेतना जीवधारियों में रहने वाला वह तत्व है जो उन्हें निर्जीव पदार्थो से भिन्न बनाता है। दूसरे शब्दों में हम उसे मनुष्यों की जीवन क्रियाओं को चलाने वाला तत्व कह सकते हैं। "चेतना स्वयं को और अपने आसपास के वातावरण को समझने तथा उसकी बातों का मूल्यांकन करने की शक्ति का नाम है।" विशेष में जिस विषय या व्यक्ति का प्रभाव सबसे ज्यादा पड़ता है। उसी का नाम उस युग को मिलता है। इस प्रकार हम आजकल प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग, द्विवेदी युग, प्रसाद युग, औद्योगिक युग, परमाणु युग, इलेक्ट्रोनिक युग, कम्प्यूटर युग आदि नाम सुनते है।

संपूर्ण सृष्टि परिवर्तनशील है। सृष्टि के इस नियम के अनुसार कोई भी वस्तु शाश्वत नहीं है। जिसका निर्माण होता है। उसका किसी न किसी रूप में अंत भी निश्चित होता है। युग की भी यही स्थिति है। एक युग की समाप्ति के पश्चात उसका स्थान दूसरा युग-ग्रहण कर लेता है। "प्रत्येक युग दूसरे युग को कुछ देकर जाता है, अन्यथा इतनी बड़ी सृष्टि अस्तित्वहीन होकर कभी की शून्य में समा जाती।" इस दृष्टि से वर्तमान समय में जो कुछ

भी हमारी धरोहर है। वह सभी बिते हुए युगों के आधार पर स्थिर है। युगों के इस आदान-प्रधान की प्रक्रिया द्वारा ही नये-नये युगों से संपूर्ण सृष्टि का संचालन चल रहा है।

चेतना शब्द का संबंध मनोविज्ञान से जुड़ा है। अंग्रेजी में चेतना शब्द का अर्थ काशसनेस है। हिंदी में चेतना शब्द को व्यापक अर्थ में लिखा गया है। चेतना शब्द बुद्धि, ज्ञान, मनोवृत्ति, स्मृति, सुधि, चेतनता, होश, संज्ञा, समझना आदि अर्थो में प्रयुक्त होता है। चेतना एक ऐसा साधन है, जिसके कारण हम देखते सुनते मसझते एवं अनेक विषयों पर चिन्तन करते है। चेतना का प्रवाह जीवन का घोतक है। विज्ञान के अनुसार "चेतना वह अनुभूति है जो मस्तिष्क में पहुँचने वाले अभिगामी आवेगो का अर्थ तुरंत अथवा बाद में लगाती हैं। मस्तिष्क कभी-कभी तो तुरंत अर्थ समझ लेता है और कभी बाद में ग्रहीत विचारों के चिन्तन मनन द्वारा उनके अर्थो को ग्रहण करता है। वैज्ञानिक तथ्यों ने पुष्ट कर दिया है कि चेतना अविकसित पदार्थ मानव मस्तिष्क का गुण धर्म है।" चेतना व्यक्ति विशेष में निहित एक ऐसी मापक इकाई है जो व्यक्ति, समाज, राष्ट्र या देश को गतिशील करती है। विकासशील बनाती है। यह स्वतंत्र आंतरिक जागृति है। वह व्यक्ति के क्रियाकलापों, व्यवहारों तथा अभिवृत्तियों का नियमन करती है। काल या समय के परिवर्तन के साथ-साथ युग चेतना बदलती रहती है। समाज संस्कृति धर्म, दर्शन, आध्यात्मिक नैतिकता तथा विज्ञान आदि का स्वरूप जिस युग में जैसा रहता है, उसे ठीक उसी रूप में ग्रहण कर अभिव्यक्त करना कवि कथाकार एवं नाटककार के साहित्य की युग-चेतना कही जाती है। तत्कालीन युग की विचारधाराएँ जो युगीन जीवन में चेतना का संचार करती है, साहित्य में युग-चेतना के नाम से जानी जाती है। प्रत्येक रचनाकार की रचना का मूलाधार युगीन जीवन और उससे संबंधित घटनाएँ रहती है। इसलिए साहित्य के माध्यम से युग-चेतना की अभिव्यक्ति होना सहज बात है। युग-चेतना से पृथक रहकर साहित्यकार अपनी रचना में तत्कालीन समय उपस्थित नहीं कर सकता।

युग का प्रभाव पूरे समाज पर देखा जा सकता है। नयी मान्ताएँ युग को निरंतर प्रभावित करती है। जिसके परिणाम स्वरूप पुरानी और तत्कालीन चेतना मान्यता और आस्था धीरे-धीरे परिवर्तित होती है और नयी मान्यताएँ चेतना और आस्था सुद्रढ बनती रहती है। इस दृष्टि से हर युग अपनी विशिष्ट प्रवृत्ति एवं प्रकृति के कारण बिते सभी युगों से भिन्न होता है। इसी भिन्नता के कारण प्रत्येक युग चेतना भी भिन्न भिन्न पायी जाती है।

विष्णु प्रभाकर जी ऐसे कहानीकार हैं जो बदलते युग को अपनी कहानियों में उतार रहे हैं और युग के साथ बने रहने का प्रयास कर रहें हैं। कथा साहित्य का समबंध जीवन के यथार्थ से जुड़ा होता है। इसलिए साहित्य भी जीवन के साथ -साथ प्रवाहमान होता है। जीवन का दृष्टिकोण भी बदलता रहता है साथ ही उसके साथ कहानी भी बदलती रहती हैं। साहित्यकार युगचेतना से मुक्त नहीं हो सकता और न साहित्य अतएव ईमानदार एवं सजग कलाकार के लिए युगचेतना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य होती है।

कथा साहित्य का संबंध जीवन के यथार्थ से जुड़ा होता है। इसलिए साहित्य भी जीवन के साथ-साथ प्रवाहमान होता है और जीवन का दृष्टिकोण भी बदलता रहता हैं। स्वयं विष्णु प्रभाकर जी के शब्दों में बताया गया है कि "मैंने अनीति का प्रचार करने के लिए कलम नहीं पकडा। मैंने मनुष्य के अंदर में छिपी हुई मनुष्यता को उस महिमा को, जिसे सब नहीं देख

पाते, नाना रुपों में अंकित करके प्रस्तुत किया है।" विष्णु जी ने निश्चित ही जीवन की विषम परिस्थितियों में संघर्षमय रहकर साहित्य का सृजन किया।

हिंदी कहानी के क्षेत्र में विष्णु प्रभाकर का प्रवेश प्रेमचंद जी के अंतिम दौर में उस समय हुआ जब जैनेन्द्र, इलाचंद्र जोशी अज्ञेय आदि कहानी के संसार में स्थापित हो गये थे। विष्णु जी की कहानियाँ जीवन के विविध संघर्ष, रंग, तनाव और साम्प्रदायिक विद्वेष के दर्द से उपजी कहानियाँ हैं और कहानियों में अधिकांश रूप से सन् 1930 से लेकर आज तक का भारत समाया हुआ हैं। रहमान का बेटा विष्णु प्रभाकर जी का दूसरा कहानि संग्रह है। इस संग्रह के अंतर्गत कुल 19 कहानियाँ आती हैं। यह कहानी संग्रह स्वतंत्रता मिलने के पहले लिखा गया है। इस संग्रह के अंतर्गत 1947 के समय की राजकीय परिस्थितियों का वर्णन करने का प्रयत्न किया गया है। उस समय युद्ध, अकाल और साम्प्रदायिक वैमनस्य और हिंसा अहिंसा के कारण हमारे देश के जीवन में जो बीभत्स नारकीय काण्ड हुए थे उनकी पृष्ठभूमि में ये कहानियाँ लिखी है, इन कहानियों में स्नेह प्यार, ममता, ऐक्य सौहार्द, सहानुभूति आदि मानवीय प्रवृतियों का उद्घाटन दिखाई देता है। इस कहानी संग्रह में संग्रहीत कहानियाँ न सिर्फ सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि उनका संदेश भी अधिक विस्तृत और प्रखर भी हैं। सभी कहानियाँ कला की दृष्टि से उच्च कोटि की रह चुकी हैं।

इस कहानी संग्रह की बहुत सी कहानियों में पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं का चित्रण दिखाई देता हैं। पूरे संग्रह में लेखक ने संघर्ष से समझौता करने का इरादा किया हैं। इसकी भाषा सहज, सरल एवं मनोभावों से उपर्युक्त रही है। सभी कहानियाँ यथार्थपरक हैं, जो कि मर्म को स्पर्श कर लेती हैं। सामाजिक समस्याओं पर ही सुलझाने के प्रयत्न किये गये हैं। सभी कहानियाँ मानवीय जीवन के परिप्रेक्ष्य में लिखी गयी है। स्वयं विष्णु प्रभाकर ने समाज में जो देखा उसे समजा तथा परखा है। उसी को ही इन कहानियों में अभिव्यक्ति दी गयी हैं। इस कहानी संग्रह के बारे में श्रीमती सुखराज राकेश आनंद का मत है कि "वे यथार्थ को उसकी संमग्रता में पकड़ते है। और उसके झूठ और पाखण्ड को निर्मम होकर व्यक्त करते हैं। सत्य के खोजी हैं और उसे ही अपनी रचनाओं में प्रतिबिंबित करने का प्रयत्न करते हैं।

इस प्रकार विष्णु प्रभाकर जी ऐसे कहानीकार हैं जो बदलते युग को अपनी कहानियों में उतार रहे है और युग के साथ बने रहने का प्रयास कर रहे हैं। विष्णु जी का स्वयं का कथन है कि "राजनितिक और आर्थिक शोषण कम भयंकर नहीं होता धार्मिक शोषण मैंने उस संघर्ष और शोषण को बहुत पास से देखा और सहा है। धृणा, विद्वेष गोली काण्ड और रक्तपात कुछ भी असंभव नहीं रहा था। धर्म की आड़ लेकर ही मनुष्य पशु बनता जा रहा था। विभाजन इसी स्थिति का परिणाम था। इस स्थिति का जो प्रभाव मुझ पर उसी का परिणाम हैं

विष्णु जी मूलत: आधुनिकता में विश्वास करते है। यही आधुनिकता की दृष्टि उनमें 'निशिकान्त' में भी देखने को मिलती हैं। निशिकान्त के ये वाक्य दृष्टव्य है - "नदी मुक्त है तभी इसमें पवित्रता है। तालाब बंद है तभी वह सड़ता है। समय और काल में अंतर है। नियम के प्रति विद्रोह अनियमिता नही। अनाचार पाप है, पर आचार को जाने बिना उसके नियमों का पालन करना अनाचार से भी बुरा है।" इसमें मूल समस्या नारी विवाह के बारें में है। अनमोल विवाह दहेज प्रथा बलात्कार, आंतरजातीय विवाह से होनेवाली परेशानियाँ आदि

समस्याएँ इस उपन्यास में निहित हैं। इस उपन्यास में अनेक पीड़ित, दुखित नारियाँ है। इसमें मालती, शीला, नीलम, अनीला, सरला और ललिता, शशि आदि नारी पात्रों की कथाएँ इस उपन्यास की कथावस्तु में समायी गयी हैं। नारियों को सामाजिक बंधनों को तोड़कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देने में उपन्यासकार को सफलता मिली है।

विष्णु प्रभाकर ने अपने एकांकियों में उन्होंने युद्ध की विभीषिका, स्त्री-पुरुष का पारस्पारिक संबंध, मासाजिक उलझनों, प्रेम-विवाह, विधवा विवाह, अछूतोद्धार, गरीबी, अन्तर्जातीय विवाह, परित्यकता नारी, रिश्वतखोरी, तलाक, हिंदू मुस्लिम संघर्ष, युवा वर्ग में व्याप्त असंतोष आदि से संबंधित समस्याओं को चित्रित किया हैं। उन्होंने समाज को दूषित करने वाली परिस्थितियों का विरोध करके व्यक्ति और समाज के विकास और परिवर्तन में सहायक बनने वाली परिस्थितियों का स्वागत किया है। वैचारिक प्रखरता और व्यक्तिनिष्ठा के अद्भूत समन्वय के कारण विष्णु प्रभाकर जी के निबंधो की भंगिमा ही अलग है। जटिल और गूढ़ भाव को भी सरल तथा सहज शब्दों में अभिव्यक्त करने में वे समर्थ रहे हैं। उनके निबंधो में विभिन्न शैलियों का भी निदर्शन हुआ हैं। विष्णु प्रभाकर के निबंध उनकी मानसिकता को समझने का सर्वश्रेष्ठ स्त्रोत हैं।

निष्कर्ष

अत: उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि विष्णु प्रभाकर का कथा साहित्य वर्तमान युग से हमें सचेत कराता है और समाज की सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक परिस्थियों से आधुनिकता का भाव उनकी कहानियों के माध्यम से दिखाते है। उनका कथा साहित्य कल की ओर भी संकेत करता है तथा उसमें स्थापित मूल्यों के प्रति समाज को एक आकर्षक संदेश स्थापित करता है। प्रभाकर जी के कथा साहित्य में वर्तमान युग में मानव की विचारधारा परिवर्तित हुई है और इस परिवर्तन से मानव की विचार शक्ति को भी परिवर्तित कर दिया है तथा मनुष्य के आपसी संबंधों में औपचारिकता और कृत्रिमता का समावेश करके समाज को सचेत होने का संदेशा स्थापित किया है और चेतना किसी भी व्यक्ति की ज्ञानावस्था या बुद्धित्व है, जो उसे जीवन के सही मार्ग की ओर द्ग्दिर्शित कराती रहती है। चेतना विभिन्न रूपों के तीन सोंपान हैं। इन तीनों सोपानों को पार करती मानव-चेतना गतिशील होती है और अंत में मनुष्य को अपने लक्ष्य तक पहुँचाने में सक्षम बनाती है। मनुष्य की सारी क्रियाओ एवं गतिशील प्रवृतिओं का मुल कारण चेतना ही है। चेतना अनुभव कर्ता द्वारा सांसारिक वस्तुओं का यथा तथ्य अवलोकन ही नहीं, अपितुं उनकी परख तथा मूल्यांकन भी है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. पिल्ले, बी,एस. विवेकानंद, विष्णु प्रभाकर के नाट्य साहित्य में सामाजिक चेतना, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
2. डॉ. हाके, महावीर रामजी, कथाकार विष्णु प्रभाकर, अमन प्रकाशन, मथुरा
3. डॉ. सबनीस, सविता जनार्दन, विष्णु प्रभाकर का कहानी साहित्य, साहित्य सागर, कानपुर
4. डॉ. मंजुला, हिंदी कहानी में युग बोध, पराग प्रकाशन, दिल्ली
5. डॉ. सत्यनारायण, स्वातंत्र्यौत्तर हिंदी कहानी का राजनीतिक परिप्रेक्ष्य, साहित्य सागर, कानपुर